

रविवार 7 जुलाई, 2024

विषय — परमेश्वर

स्वर्ण पाठ: यशायाह 45: 5

"मैं यहोवा हूं और दूसरा कोई नहीं, मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं; यद्यपि तू मुझे नहीं जानता, तौभी मैं तेरी कमर कसूंगा।"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 24: 1-5, 7-10

- 1 पृथ्वी और जो कुछ उस में है यहोवा ही का है; जगत और उस में निवास करने वाले भी।
- 2 क्योंकि उसी ने उसकी नींव समुद्रों के ऊपर दृढ़ करके रखी, और महानदों के ऊपर स्थिर किया है॥
- 3 यहोवा के पर्वत पर कौन चढ़ सकता है? और उसके पवित्र स्थान में कौन खड़ा हो सकता है?
- 4 जिसके काम निर्दोष और हृदय शुद्ध है, जिसने अपने मन को व्यर्थ बात की ओर नहीं लगाया, और न कपट से शपथ खाई है।
- 5 वह यहोवा की ओर से आशीष पाएगा, और अपने उद्धार करने वाले परमेश्वर की ओर से धर्मी ठहरेगा।
- 7 हे फाटकों, अपने सिर ऊंचे करो। हे सनातन के द्वारों, ऊंचे हो जाओ। क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा।
- 8 वह प्रतापी राजा कौन है? परमेश्वर जो सामर्थी और पराक्रमी है, परमेश्वर जो युद्ध में पराक्रमी है!
- 9 हे फाटकों, अपने सिर ऊंचे करो हे सनातन के द्वारों तुम भी खुल जाओ! क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा!
- 10 वह प्रतापी राजा कौन है? सेनाओं का यहोवा, वही प्रतापी राजा है॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. व्यवस्थाविवरण 6: 4

- 4 हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है;

2. व्यवस्थाविवरण 34: 1 (संभूमि), 4, 7, 10

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 1 फिर मूसा मोआब के अराबा से नबो पहाड़ पर, जो पिसगा की एक चोटी और यरीहो के साम्हने है, चढ़ गया; और यहोवा ने उसको दान तक का गिलाद नाम सारा देश,
- 4 तब यहोवा ने उस से कहा, जिस देश के विषय में मैं ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब से शपथ खाकर कहा था, कि मैं इसे तेरे वंश को दूंगा वह यही है। मैं ने इस को तुझे साक्षात दिखला दिया है, परन्तु तू पार हो कर वहां जाने न पाएगा।
- 7 मूसा अपनी मृत्यु के समय एक सौ बीस वर्ष का था; परन्तु न तो उसकी आंखें धुंधली पड़ीं, और न उसका पौरूष घटा था।
- 10 और मूसा के तुल्य इस्राएल में ऐसा कोई नबी नहीं उठा, जिस से यहोवा ने आम्हने-साम्हने बातें कीं,

3. यहोशू 1: 1, 2 (अब), 5 (जैसा)

- 1 यहोवा के दास मूसा की मृत्यु के बाद यहोवा ने उसके सेवक यहोशू से जो नून का पुत्र था कहा।
- 2 मेरा दास मूसा मर गया है; सो अब तू उठ, कमर बान्ध, और इस सारी प्रजा समेत यरदन पार हो कर उस देश को जा जिसे मैं उन को अर्थात् इस्राएलियों को देता हूं।
- 5 तेरे जीवन भर कोई तेरे साम्हने ठहर न सकेगा; जैसे मैं मूसा के संग रहा वैसे ही तेरे संग भी रहूंगा; और न तो मैं तुझे धोखा दूंगा, और न तुझ को छोड़ूंगा।

4. यहोशू 3: 8-10 (से 2nd.), 13, 14, 16 (से 1st.), 17

- 8 और तू वाचा के सन्दूक के उठाने वाले याजकों को यह आज्ञा दे, कि जब तुम यरदन के जल के किनारे पहुंचो, तब यरदन में खड़े रहना॥
- 9 तब यहोशू ने इस्राएलियों से कहा, कि पास आकर अपने परमेश्वर यहोवा के वचन सुनो।
- 10 और यहोशू कहने लगा, कि इस से तुम जान लोगे कि जीवित ईश्वर तुम्हारे मध्य में है।
- 13 और जिस समय पृथ्वी भर के प्रभु यहोवा की वाचा का सन्दूक उठाने वाले याजकों के पांव यरदन के जल में पड़ेंगे, उस समय यरदन का ऊपर से बहता हुआ जल थम जाएगा, और ढेर हो कर ठहरा रहेगा।
- 14 सो जब प्रजा के लोगों ने अपने डेरों से यरदन पार जाने को कूच किया, और याजक वाचा का सन्दूक उठाए हुए प्रजा के आगे आगे चले,
- 16 तब जो जल ऊपर की ओर से बहा आता था वह बहुत दूर, अर्थात् आदाम नगर के पास जो सारतान के निकट है रुककर एक ढेर हो गया, और दीवार सा उठा रहा, और जो जल अराबा का ताल, जो खारा ताल भी कहलाता है, उसकी ओर बहा जाता था, वह पूरी रीति से सूख गया; और प्रजा के लाग यरीहो के साम्हने पार उतर गए।
- 17 और याजक यहोवा की वाचा का सन्दूक उठाए हुए यरदन के बीचोंबीच पहुंचकर स्थल पर स्थिर खड़े रहे, और सब इस्राएली स्थल ही स्थल पार उतरते रहे, निदान उस सारी जाति के लोग यरदन पार हो गए॥

5. यहोशू 4: 5 (से 1st.), 21 (कब) (से), 22-24

- ⁵ तब यहोशू ने उनसे कहा,
²¹ तब उसने इस्राएलियों से कहा, आगे को जब तुम्हारे लड़केबाले अपने अपने पिता से यह पूछें, कि इन पत्थरों का क्या मतलब है?
²² तब तुम यह कहकर उन को बताना, कि इस्राएली यरदन के पार स्थल ही स्थल चले आए थे।
²³ क्योंकि जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने लाल समुद्र को हमारे पार हो जाने तक हमारे साम्हने से हटाकर सुखा रखा था, वैसे ही उसने यरदन का भी जल तुम्हारे पार हो जाने तक तुम्हारे साम्हने से हटाकर सुखा रखा॥
²⁴ इसलिये कि पृथ्वी के सब देशों के लोग जान लें कि यहोवा का हाथ बलवन्त है; और तुम सर्वदा अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानते रहो॥

6. यहोशू 5: 13-15

- ¹³ जब यहोशू यरीहो के पास था तब उसने अपनी आंखें उठाई, और क्या देखा, कि हाथ में नंगी तलवार लिये हुए एक पुरुष साम्हने खड़ा है; और यहोशू ने उसके पास जा कर पूछा, क्या तू हमारी ओर का है, वा हमारे बैरियों की ओर का?
¹⁴ उसने उत्तर दिया, कि नहीं; मैं यहोवा की सेना का प्रधान हो कर अभी आया हूं। तब यहोशू ने पृथ्वी पर मुंह के बल गिरकर दण्डवत किया, और उस से कहा, अपने दास के लिये मेरे प्रभु की क्या आज्ञा है?
¹⁵ यहोवा की सेना के प्रधान ने यहोशू से कहा, अपनी जूती पांव से उतार डाल, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र है। तब यहोशू ने वैसा ही किया॥

7. यहोशू 24: 1 (से 1st.), 2 (से 3rd.), 3-5 (से 1st.), 6, 7 (से:), 11 (से:), 13 (से 1st.), 14, 31

- ¹ फिर यहोशू ने इस्राएल के सब गोत्रों को शकेम में इकट्ठा किया, और इस्राएल के वृद्ध लोगों, और मुख्य पुरुषों, और न्यायियों, और सरदारों को बुलवाया; और वे परमेश्वर के साम्हने उपस्थित हुए।
² तब यहोशू ने उन सब लोगों से कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस प्रकार कहता है, कि प्राचीन काल में अब्राहीम और नाहोर का पिता तेरह आदि, तुम्हारे पुरखा परात महानद के उस पार रहते हुए दूसरे देवताओं की उपासना करते थे।
³ और मैं ने तुम्हारे मूलपुरुष अब्राहीम को महानद के उस पार से ले आकर कनान देश के सब स्थानों में फिराया, और उसका वंश बढ़ाया। और उसे इसहाक को दिया।

- 4 फिर मैं ने इसहाक को याकूब और ऐसाव दिया। और ऐसाव को मैं ने सेईर नाम पहाड़ी देश दिया कि वह उसका अधिकारी हो, परन्तु याकूब बेटों-पोतों समेत मिस्र को गया।
- 5 फिर मैं ने मूसा और हारून को भेज कर उन सब कामों के द्वारा जो मैं ने मिस्र में किए उस देश को मारा; और उसके बाद तुम को निकाल लाया।
- 6 और मैं तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र में से निकाल लाया, और तुम समुद्र के पास पहुंचे; और मिस्रियों ने रथ और सवारों को संग ले कर लाल समुद्र तक तुम्हारा पीछा किया।
- 7 और जब तुम ने यहोवा की दोहाई दी तब उसने तुम्हारे और मिस्रियों के बीच में अन्धियारा कर दिया, और उन पर समुद्र को बहाकर उन को डुबा दिया; और जो कुछ मैं ने मिस्र में किया उसे तुम लोगों ने अपनी आंखों से देखा; फिर तुम बहुत दिन तक जंगल में रहे।
- 11 तब तुम यरदन पार हो कर यरीहो के पास आए।
- 13 फिर मैं ने तुम्हें ऐसा देश दिया जिस में तुम ने परिश्रम न किया था।
- 14 इसलिये अब यहोवा का भय मानकर उसकी सेवा खराई और सच्चाई से करो; और जिन देवताओं की सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार और मिस्र में करते थे, उन्हें दूर करके यहोवा की सेवा करो।
- 31 और यहोशू के जीवन भर, और जो वृद्ध लोग यहोशू के मरने के बाद जीवित रहे और जानते थे कि यहोवा ने इस्राएल के लिये कैसे कैसे काम किए थे, उनके भी जीवन भर इस्राएली यहोवा ही की सेवा करते रहे।

8. 1 यूहन्ना 5: 3, 14

- 3 और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उस की आज्ञाओं को मानें; और उस की आज्ञाएं कठिन नहीं।
- 14 और हमें उसके साम्हने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उस की इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो हमारी सुनता है।

9. यहूदा 24, 25

- 24 अब जो तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है, और अपनी महिमा की भरपूरी के साम्हने मगन और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है।
- 25 उस अद्वैत परमेश्वर हमारे उद्धारकर्ता की महिमा, और गौरव, और पराक्रम, और अधिकार, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जैसा सनातन काल से है, अब भी हो और युगानुयुग रहे। आमीन॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 587: 5-8

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

परमेश्वर। मैं जो महान हूँ; सर्व-ज्ञान, सर्व-दर्शन, सर्व-कार्य, सर्व-ज्ञान, सर्व-प्रिय और शाश्वत; सिद्धांत; मन; अन्तः मन; आत्मा; जिंदगी; सत्य; प्रेम; सभी पदार्थ; बुद्धि।

2. 330: 19 (ईश्वर)-24

ईश्वर वही है जो शास्त्र उसे घोषित करते हैं - जीवन, सत्य, प्रेम। आत्मा ईश्वरीय सिद्धांत है, और ईश्वरीय सिद्धांत प्रेम है, और प्रेम मन है, और मन अच्छा और बुरा दोनों नहीं है, क्योंकि ईश्वर मन है; इसलिए वास्तव में मन एक ही है, क्योंकि ईश्वर एक है।

3. 167: 17-19

एक ईश्वर के पास और आत्मा की शक्ति का लाभ उठाने के लिए, आपको ईश्वर से प्रेम करना चाहिए।

4. 340: 15-22

"तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना॥" (निर्गमन 20: 3). पहला आदेश मेरा पसंदीदा पाठ है। यह क्रायश्चियन साइंस प्रदर्शित करता है। यह ईश्वर, आत्मा, मन की विजय को प्रमाणित करता है; यह दर्शाता है कि मनुष्य के पास ईश्वर, शाश्वत भलाई के अलावा कोई अन्य आत्मा या मन नहीं होगा, और सभी लोगों के पास एक मन होगा। प्रथम आज्ञा का दिव्य सिद्धांत, विज्ञान के आधार को बताता है, जिसके द्वारा मनुष्य स्वास्थ्य, पवित्रता और जीवन को शाश्वत प्रदर्शित करता है।

5. 286: 16-26

सैक्सन और बीस अन्य जीभों में भगवान के लिए अच्छा शब्द है। पवित्रशास्त्र ने वह सब घोषित किया, जो उसने स्वयं के लिए अच्छा माना, जैसे - सिद्धांत में अच्छा और विचार में। इसलिए आध्यात्मिक ब्रह्मांड अच्छा है, और भगवान को दर्शाता है जैसे वह है।

ईश्वर के विचार परिपूर्ण और शाश्वत हैं, पदार्थ और जीवन हैं। भौतिक और लौकिक विचार मानव हैं, जिसमें त्रुटि है, और चूंकि भगवान, आत्मा, एकमात्र कारण है, उनके पास एक दिव्य कारण का अभाव है। लौकिक और भौतिक तत्त्व आत्मा की रचना नहीं हैं। वे आध्यात्मिक और शाश्वत के नकली हैं।

6. 139: 4-8

शुरुआत से लेकर अंत तक, पवित्रशास्त्र आत्मा, मन की बात की विजय से भरपूर है। मूसा ने मन की शक्ति को उसके द्वारा सिद्ध किया, जिसे पुरुषों ने चमत्कार कहा; तब यहोशू, एलिय्याह और एलीशा ने किया।

7. 583: 5-8 (सं;)

इसराइल के बच्चे. आत्मा के प्रतिनिधि, न कि भौतिक इन्द्रिय के; आत्मा की संतान, जो त्रुटि, पाप और इन्द्रिय से जूझते हुए, दिव्य विज्ञान द्वारा शासित होते हैं;

8. 566: 1-9

चूंकि लाल सागर के माध्यम से इज़राइल के बच्चों को विजयी रूप से निर्देशित किया गया था, इसलिए मानव भय के अंधेरे और बहते ज्वार, — क्योंकि वे जंगल से होकर निकले थे, जो मानवीय आशाओं के महान रेगिस्तान से थके हुए थे, और वादा किए गए आनन्द की आशा करते थे,— इसलिए आध्यात्मिक विचार आत्मा से अस्तित्व की भौतिक भावना से लेकर आत्मा तक, भगवान से प्रेम करने वाले उनके लिए तैयार किए गए गौरव तक, आत्मा से उनके मार्ग में सभी सही इच्छाओं का मार्गदर्शन करेगा।

9. 213: 27-3

नश्वर मन कई तारों की वीणा है, हाथ के अनुसार या तो कलह या सद्भाव को हतोत्साहित करता है, जो उस पर झाड़ू लगाता है, वह मानव या परमात्मा है।

इससे पहले कि मानव ज्ञान चीजों की झूठी भावना में अपनी गहराई तक डूबा हो, — भौतिक उत्पत्ति में विश्वास करते हैं जो एक मन और अस्तित्व के सच्चे स्रोत को छोड़ देते हैं, — यह संभव है कि सत्य से छापें ध्वनि के रूप में अलग थीं, और वे ध्वनि के रूप में आदिम नबियों के लिए आए थे।

10. 131: 26-29

यीशु के मिशन ने भविष्यवाणी की पुष्टि की, और पुराने समय के तथाकथित चमत्कारों को ईश्वरीय शक्ति के प्राकृतिक प्रदर्शनों, प्रदर्शनों के रूप में समझाया, जिन्हें समझा नहीं गया था।

11. 183: 19-32

प्रकृति के नियम आत्मा के नियम हैं; लेकिन नश्वर आमतौर पर कानून के रूप में पहचानते हैं जो आत्मा की शक्ति को छुपाता है। डिवाइन माइंड सही ढंग से मनुष्य की संपूर्ण आज्ञाकारिता, स्नेह और शक्ति की माँग करता है। किसी भी कम निष्ठा के लिए कोई आरक्षण नहीं किया जाता है। सत्य का पालन मनुष्य को शक्ति और सामर्थ्य देता है। त्रुटि के अधीन होने से शक्ति का नुकसान होता है।

सत्य वास्तविक आध्यात्मिक कानून के साथ सभी बुराइयों और भौतिकवादी तरीकों को निकालता है, — वह कानून जो अंधे को दृष्टि देता है, बहरे को सुनता है, गूंगे को आवाज देता है, पैर को लंगड़ा करता है। यदि क्रिश्चियन साइंस मानवीय विश्वास का अपमान करता है, तो यह आध्यात्मिक समझ का सम्मान करता है; और केवल एक मन ही सम्मान का हकदार है।

12. 23: 21-31

हिब्रू, ग्रीक, लैटिन और अंग्रेजी में, विश्वास और तत्संबंधी शब्द इन दो परिभाषाओं, विश्वास और भरोसेमंदता हैं। एक प्रकार का विश्वास दूसरों के कल्याण पर विश्वास करता है। एक और तरह का विश्वास ईश्वरीय प्रेम को समझता है और कैसे डर और कांपने के साथ "खुद के उद्धार का काम करना है।" "हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं, मेरे अविश्वास का उपाय कर।" एक अंध विश्वास की लाचारी व्यक्त करता है; जबकि निषेधाज्ञा, "विश्वास... तो तू और उद्धार पाएगा।" आत्मनिर्भर भरोसेमंदता की मांग करता है, जिसमें आध्यात्मिक समझ शामिल है और सभी को ईश्वर तक पहुंचाता है।

13. 112: 16-22

ईसाई विज्ञान में अनंत से एक सिद्धांत और उसका अनंत विचार आता है, और इस अनंतता के साथ आध्यात्मिक नियम, कानून और उनका प्रदर्शन आता है, जो महान दाता की तरह, "कल, और आज, और हमेशा के लिए समान हैं;" इस प्रकार चिकित्सक के दिव्य सिद्धांत और मसीह-विचार हैं इब्रानियों के लिए लिखे पत्र में इसका वर्णन किया गया है।

14. 481: 2-6

मनुष्य ईश्वर, आत्मा, और कुछ नहीं के लिए सहायक है। ईश्वर का होना अनंत, स्वतंत्रता, सद्भाव और असीम आनंद है। "और जहां कहीं प्रभु का आत्मा है वहां स्वतंत्रता है।" योर के द्वीपसमूह की तरह, मनुष्य स्वतंत्र है "पवित्रतम में प्रवेश करने के लिए," - भगवान का क्षेत्र।

15. 368: 14-19

जब हम त्रुटि में होने की तुलना में अधिक विश्वास करते हैं, तो हम आत्मा में अधिक विश्वास रखते हैं, बात करने की तुलना में अधिक विश्वास करते हैं, मरने की तुलना में जीने में अधिक विश्वास करते हैं, मनुष्य की तुलना में भगवान में अधिक विश्वास करते हैं, तब कोई भी भौतिक दमन हमें बीमार होने और त्रुटि को नष्ट करने से नहीं रोक सकता।

16. 496: 15-19

शाश्वत रूप से इस विचार पर दृढ़ रहें, - कि यह आध्यात्मिक विचार है, पवित्र आत्मा और मसीह, जो आपको वैज्ञानिक निश्चितता के साथ, अपने ईश्वरीय सिद्धांत, प्रेम, अंतर्निहित, अतिव्यापी, और सभी को शामिल करने के आधार पर प्रदर्शित करने में सक्षम बनाता है।

17. 290: 1-2

जीवन वह चिरस्थायी "मैं हूं" है, वह अस्तित्व जो था और है और रहेगा, जिसे कोई मिटा नहीं सकता।

18. 17: 12-15

क्योंकि राज्य, शक्ति और महिमा सदा के लिए तुम्हारी है।

क्योंकि परमेश्वर अनंत है, सर्व शक्ति है, सभी जीवन, सत्य, प्रेम, सभी पर शासक है, और सभी में है।

दैनिक कर्तव्यों

मेरी बेकर एंड्री द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी

सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6